23

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर को तोड़ने वाले

(गलातियों 5:19-21)

इस पाठ के साथ हम ''घर जहां आत्मा वास करता है'' पर अपनी शृंखला का समापन करते हैं। हम ने इस शृंखला में एक सफल घर अर्थात एक खुशहाल घर, एक स्थिर घर, जो बिखरने के बजाय इकट्ठा रहता है, रखने के ढंगों पर ज़ोर दिया है। ऐसे घर में हर व्यक्ति न केवल व्यक्तिगत परिपूर्णता के बोध को, बल्कि परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध भी पाता है।

हमारा मानना है कि यह परिणाम घर के लोगों में गलातियों 5:22, 23 में बताए आत्मा का फल जैसे ''प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम'' देते हैं।

परन्तु आत्मा के फल को पाने में रुकावटें भी हैं और इस कारण सफल घर पाने में भी रुकावटें हैं। कुछ बातें खुशहाल घर होने से हमें रोकती हैं, या खुशहाल घर को तोड़ सकती हैं। हम उन्हें ''घर को तोड़ने वाले'' नाम दे रहे हैं।

''घर को तोड़ने वाले'' शब्द का इस्तेमाल कई बार उस स्त्री को किया जाता है जो किसी आदमी को फुसलाती है, जिसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति अपनी फुसलाने वाली के साथ रहने के लिए अपनी पत्नी और परिवार को छोड़ देता है। वह घर टूट जाता है; तो उस स्त्री को ''घर को तोड़ने वाली'' कहा जाता है।

इस पाठ में जिनकी हम बात कर रहे हैं वे सबसे अधिक फुसलाने वाली स्त्री से भी कहीं अधिक घर को तोड़ने वाली हैं। वे ''घर को तोड़ने वाली'' कौन सी बातें हैं? पौलुस ने उन्हें ''शरीर के काम'' कहा है। गलातियों 5:19-21 में उसने उनके बारे में बताया:

> शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

हम इन, शरीर के कामों पर चर्चा करके देखना चाहते हैं कि हम वास्तव में अपने घरों को कैसे तोड़ते हैं।

शरीर के काम

पापों की पौलुस की सूची के पहले समूह में ''व्यभिचार,'' ''गन्दे काम,'' और ''लुचपन'' आते हैं। ये शरीर के पाप हैं। इस आयत को घर पर लागू करने से हम यह ज़ोर दे सकते हैं कि *शरीर के पाप घर को तोड़ सकते हैं*।

व्यभिचार में ''अनैतिकता'' ही आती है। हमने पति और पत्नी के एक-दूसरे के वफ़ादार होने की आवश्यकता पर पहले ही ज़ोर दिया है। हमने कहा है कि व्यभिचार विवाह को किसी भी बात से जल्दी खत्म कर सकता है। व्यभिचार या अनैतिकता में समलैंगिकता का पाप भी है (रोमियों 1:26, 27), जो बहुलैंगिकता की तरह ही विवाह को बर्बाद कर सकता है। वास्तव में समलैंगिकता परमेश्वर की परिभाषा के अनुसार घरों को बनाने में भी रुकावट डालती है। इसके अलावा शरीर के पापों के आमतौर पर सांसारिक परिणाम होते हैं। उदाहरण के लिए Aids जैसी कुछ बीमारियां और अवैध गतिविधियों से ही पनपती हैं, जो बीमारी और अन्त में मृत्यु का कारण बनती हैं। ऐसे परिणाम घरों को तोड़ सकते हैं। ''फोर्निकेशन'' अविवाहित लोगों के बीच शारीरिक सम्बन्ध की ''अनैतिकता के अधीन ही आता है।'' अविवाहित लोगों के बीच अनैतिकता से गुप्त रोगों जैसे दुष्परिणाम मिल सकते हैं। बिना योजना के माता-पिता बनना या नासमझी से किया गया विवाह लगभग आरम्भ होने से पहले ही घर को खत्म कर देता है।

गन्दे काम और लुचपन। शरीर के पापों की और किस्में ''गन्दे काम और लुचपन'' (अशुद्धता और ''कामुकता''; KJV) शब्दों द्वारा सुझाए जाते हैं। शरीर के इन कामों में (क) ऐसे व्यवहार में लिप्त होना है, जो विपरीत सैक्स को आकर्षित करे या फुसलाए, (ख) ऐसी गतिविधियों में भाग लेना जो सैक्सुअल लाइसेंस को बढ़ावा देती हैं और (ग) आज के समाज में आसानी से कामुक यां नंगी तस्वीरें देखने से मन में कामुक विचार आ सकते हैं। ऐसा व्यवहार न केवल परमेश्वर को नाराज़ करता है, बल्कि और पाप करने या सैक्स के लिए किसी के विचार को खराब करने का काम कर सकता है-घर के लिए दोनों ही हानिकारक हैं।

धार्मिक झगड़ा

दिए गए पापों के दूसरे समूह में धार्मिक पाप अर्थात ''मूर्तिपूजा'' और ''टोना'' आते हैं। गलातिया के मसीही लोगों को पेश ये धार्मिक मुद्दे दिखाए जाते हैं। अपने समाज में हमारे सामने कई अलग-अलग मुद्दे हैं पर हम इस विचार को यह ध्यान दिलाते हुए लागू कर सकते हैं कि *धार्मिक झगड़ा घर को तोड़ देगा।*

बेशक, गलातिया की समस्या केवल घर में धार्मिक झगड़े की नहीं थी, चाहे नये नियम के समय में कई बार ऐसी समस्याएं आती थीं क्योंकि मसीही लोग गैर मसीही लोगों से विवाह कर लेते थे। इसके विपरीत यहां जिस शिक्षा की पौलुस ने चेतावनी दी है वह मूर्तिपूजा और/या जादू-टोना करने में जाने की है। स्पष्टतया मूर्तिपूजा सहित हमें धर्म की किसी भी किस्म को स्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी की आवश्यकता है, जिसमें आज की भौतिक वस्तुओं की पूजा है।

इस चेतावनी को घर में लागू करने का शायद सबसे बढ़िया काम घर में धार्मिक झगड़े के बुरे प्रभावों की ओर ध्यान दिलाना है। घर को किस प्रकार का धार्मिक झगड़ा नष्ट कर सकता है?

जब कोई मसीही व्यक्ति गैर-मसीही से विवाह कर लेता है, तो झगड़े और समस्याएं आनी लगभग पक्की है। वह दम्पत्ति आराधना कहां करेगा? अपने शेष जीवनों में प्रत्येक सप्ताह उन घण्टों के दौरान जब कलीसिया इकट्ठा होती है, दोनों के अलग-अलग जाने पर परिवार शायद ही खुशहाल रहे। यदि मसीही व्यक्ति प्रभु की कलीसिया को छोड़ता है, तो विवाह अपना निर्णायक प्रभाव खो देता है, प्रभु एक सेवक खो देता है और मसीही व्यक्ति अपने प्राण की हानि उठाता

है! बच्चों की भी समस्या है कि वे किस विश्वास को मानेंगे? वे कहां आराधना करेंगे? यह तय करने के लिए कि कौन किसके साथ और कहां जाए, हिसाब लगाने के बावजूद, यह तथ्य रह जाता है कि पति और पत्नी अपने जीवन में एक नहीं हैं। जब पति और पत्नी धार्मिक रूप में अलग हों, तो झगड़ा होना पक्का है।

समाधान क्या है? विश्वासी मसीही से विवाह। यदि आप पहले से किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह कर चुके हैं जिसका विश्वास वह नहीं है, जो आपका है, तो दोनों को परमेश्वर के वचन से इकट्ठे अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि आप वे मसीह में एक हो सकें।

क्रोध, झगड़ा और स्वार्थ

पापों के तीसरे समूह में, शत्रुता, ''झगड़ा,'' ''ईर्ष्या,'' ''क्रोध का फूटना,'' ''विरोध,'' ''फूट,'' ''विधर्म,'' ''डाह'' शामिल हैं। हम इन चेतावनियों को यह कहकर घर में लागू कर सकते हैं कि *क्रोध और झगड़ा घर को तोड़ देंगे*।

इन शब्दों का क्या अर्थ है? पहले शब्द का अर्थ ''दो वर्गों, देशों और लोगों की तरह 'बैर' '' है। अनुवादित शब्द ''झगड़ा'' (''असहमति''; NIV) ''संसार और कलीसिया दोनों में घृणा का स्वाभाविक परिणाम है।''[1] ''ईर्ष्या,'' या ''जोश,'' और ''क्रोध'' का इस्तेमाल नये नियम में अच्छे अर्थ में हो सकता है, पर यहां इनका इस्तेमाल बुरे अर्थ में है। ''जब जोश [और] क्रोध स्वार्थी उद्देश्यों से हों और घमण्ड को चोट पहुंचाएं, तो वे बुरे हैं और दूसरों को हानि पहुंचाते हैं।''[2] ''झगड़ा'' जिसका अनुवाद और कहीं ''स्वार्थ की अभिलाषा'' या ''स्वार्थ'' हुआ है और मुख्यतया ''काम के लिए स्वार्थी और अपने आपको बड़ा बनाने का ढंग'' है। ''फूट'' और ''विधर्म'' का सम्बन्ध ''वे मामले हैं, जिन में लोग बंटे हुए हैं और कलह बढ़ती है।''[3]

बेशक पौलुस इन समस्याओं की बात मुख्यता ऐसे नहीं कर रहा था जैसे वह घर में हो। यदि उसके मन में कोई भी सदंर्भ था तो वह कलीसिया ही थी, जिसमें क्रोध, बैर और गुटबाजियां आमतौर पर होती हैं।

जब घर में ऐसी स्थिति होती है यानी जब उस घर में ये गुण दिखाई दें तो वह घर या तो पहले से टूटा हुआ है और केवल खोल की तरह है, या फिर टूटने के कगार पर है। यह बात सच है। घर में चाहे कितने भी लोग क्यों न हों, चाहे माता-पिता और बच्चे ही हों या केवल पति और पत्नी हों। वास्तव में कई घर इन पापों के कारण टूट गए। वे घर जिनमें किसी ने व्यभिचार नहीं किया, वे घर जिनमें पति-पत्नी दोनों मसीही थे, और वे घर जो वर्षों से इकट्ठा थे, बैर, झगड़े, ईर्ष्या और क्रोध के कारण टूट गए।

घर में ऐसे पापों का पता चलने पर कोई ध्यान दिलाने वाली बात है? हां! गलातियों 5:20ख में पौलुस द्वारा बताए गए पापों के कारण दो मुख्य बातें बनती हैं: स्वार्थ और समस्याएं खड़ी होने पर उन्हें न सुलझा पाना।

स्वार्थ

घर में हों या बाहर अपनी मर्ज़ी मनवाने या अधिक लाभ लेने की ज़िद पर अड़े व्यक्ति का विचार किए बिना। कालांतर में स्वाग्रह और स्वाभिमान पर काफ़ी कुछ कहा गया है। हमें

स्वाभिमान की आवश्यकता है। स्वाभिमान की कमी के बजाय बड़ी समस्या स्वार्थ की है। घर में क्रोध और झगड़े की समस्या का बेहतर समाधान शायद यही है कि मसीही लोग स्वार्थी न हों, अपनी मर्जी न मनवाएं (तुलना 1 कुरिन्थियों 13:5), बल्कि दूसरों को अपने से बेहतर मानें (फिलिप्पियों 2:3, 4) और दूसरों से अपने जैसा प्रेम रखें (मत्ती 22:39; देखें 7:12)।

समस्याओं से सही ढंग से पेश आने की नाकामी

किसी भी परिवार और घर में समस्याएं आती हैं। परन्तु बहुत बार उन नाराज़गियों को उन लोगों के बीच में लाने के बजाय हम उन्हें छिपा लेते हैं। फिर वे बढ़ती रहती हैं और अन्त में झगड़े और फूट का कारण बनती हैं। एक-दूसरे के विरुद्ध किए गए हमारे पापों की परवाह करने के बजाय हम अपने लिए और परिवार के दूसरे लोगों के लिए उन पापों से इनकार करते हैं।

किसी ने कहा है, ''निष्पक्ष लड़ना सीखना आवश्यक है। यह बात सच है। इससे भी सच यह है कि हमें अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध की समस्याओं के अर्थात बाइबल के यानी मसीही ढंग से निपटना सीखना आवश्यक है।'' हमें क्षमा मांगने और क्षमा मांगने को तैयार और क्षमा देने के योग्य होना आवश्यक है।

कड़वाहट मन में रखना, जो यह कहने का एक और ढंग है कि हम क्षमा करने से इनकार करते हैं, घर में झगड़े और टूटने का कारण होगा। घर में लोगों के लिए पौलुस की नसीहत मानने योग्य है: ''क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दो'' (इफिसियों 4:26, 27)।

मतवालापन

हमारे वचन पाठ में दिए गए शरीर के दो अन्तिम कामों में पाप की चौथी किस्म है: ''मतवालापन'' और ''लीला क्रीड़ा।'' हम इन विशेषताओं को यह कहकर घर पर लागू कर सकते हैं कि *मतवालापन* या और नशों की आदत घर को तोड़ सकती है।

हम जानते हैं कि मतवालापन क्या है। ''लीलाक्रीड़ा'' का सम्बन्ध शराबियों की शोर-शराबे वाली पार्टियों में होगा।

''लीला क्रीड़ा'' के सम्बन्ध में हम शायद यह कह सकते हैं कि ''पार्टियां करना'' घर को तोड़ सकता है। वास्तव में कई घर तो इसलिए टूट चुके हैं क्योंकि पति या पत्नी को क्रीड़ा और रंगरलियां मनाना ''अच्छा लगता है।'' बेशक, मनोरंजन का हर रूप घर के लिए खतरनाक नहीं, पर कुछ मनोरंजन इसे नष्ट कर देंगे। यह कहा जा सकता है कि किसी भी प्रकार का मनोरंजन यदि *अधिक हो जाए* तो वह घर को तोड़ सकता है।

मतवालापन सदा से घर को तोड़ने वाली समस्या शराब पीने के दुष्प्रभाव से हो सकता है कि पता न चले। मतवालेपन पर इंटरनेट पर दी गई अधिकतर जानकारी चुटकुलों के रूप में है। एक हास्य कलाकार ने कहा, ''मैंने पीने की बुराइयों के बारे में पढ़ा, तो मैंने पढ़ना बन्द कर देने का निर्णय लिया।'' *परन्तु मतवालापन कोई मनोरंजन नहीं है।* मतवालापन हंसी की बात नहीं है!

क्या शराबी पिता के बच्चे को लगता है कि मतवालापन हंसी की बात है? उसका पिता नौकरी नहीं कर सकता क्योंकि वह शराब पी लेता है, सुबह उठ नहीं पाता और काम पर देरी से

जाता है, या पीकर काम पर चला जाता और नौकरी से निकाल दिया जाता है। परिणाम में निर्धनता मिलती है। उसके अलावा जब पिता पी लेता है, तो वह क्रूर होकर अपनी पत्नी को गालियां निकालता है और अपने बच्चों को पीटता है। क्या ऐसा बच्चा मान यह लेगा कि मतवालापन हंसी की बात है?

क्या उस छोटे लड़के की मां जिसके ऊपर से शराबी ड्राइवर ने गाड़ी चढ़ा दी, मानेगी कि मतवालापन हंसी की बात है? क्या अभी भी उस जवान अविवाहित महिला के लिए जो इस कारण गर्भवती हो गई क्योंकि उसने शराब पी रखी थी, मज़ाक या मनोरंजन की बात है? बलात्कार की शिकार उस स्त्री के लिए यह मनोरंजन की बात है जिस पर शराबियों की एक टोली ने जिन्होंने बहुत पी ली थी उसके साथ कुछ ''मौज मस्ती'' करने के लिए उस पर हमला कर दिया?

घरेलू हिंसा में मतवालापन पत्नी की पिटाई या बच्चों की पिटाई में मुख्य योगदान देता है। यह झूठ बोलने या उस छल या शारीरिक पाप करने, ज़िम्मेदारियों को मानने में नाकाम होने और निर्धनता और तलाक का कारण बनता है।

मतवालापन मनोरंजन नहीं बल्कि एक पाप है। पुराना नियम मतवालेपन के विरुद्ध चेतावनी देता है (नीतिवचन 23:29-35) और नया नियम स्पष्ट कहता है कि मतवालापन पाप है (रोमियों 13:13, 14; 1 कुरिन्थियों 5:11-13; 6:9, 10; इफिसियों 5:18)। बाइबल में मतवालेपन के कुछ परिणामों के उदाहरण सम्भाले पड़े हैं। नूह के मतवालेपन के कारण उसके पुत्र को श्राप मिला। लूत का मतवालापन उसकी अपनी दो बेटियों के साथ गोत्र गमन का कारण बना (उत्पत्ति 9:20-27; 19:29-38)।

स्पष्टतया मतवालापन घर को तोड़ने वाला है। इस समस्या पर मसीही व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए। पहले तो मसीही व्यक्ति को नशे से बचना चाहिए। थोड़ा सा नशा भी खतरनाक हो सकता है। इसके अलावा मसीही व्यक्ति को किसी ऐसे पुरुष अथवा स्त्री से विवाह करना चाहिए जो शराब न पीता हो और अपने बच्चों को शराब पीने की बुराइयां बताएं। मतवालापन घर को तोड़ सकता है![4]

सारांश

क्या आप सफल घर पाना चाहते हैं? तो अपने जीवन में आत्मा के फल को जोड़ लें और शरीर के कामों की जंगली बूटी को निकाल लें! विशेषकर घर को तोड़ने वालों से बचना चाहिए:

- शारीरिक पाप आपके घर को तोड़ देगा।
- धार्मिक झगड़ा आपके घर को तोड़ देगा।
- क्रोध, झगड़ा और स्वार्थ हमारे घर को तोड़ देगा।
- मतवालापन और नशे की अन्य आदतें आपके घर को तोड़ देंगी।

हम सब जहां तक हो सके अपने घरों को बढ़िया बनाने का निश्चय लें ताकि हम खुशहाल, स्वस्थ, सफल जीवन जी सकें। ऐसे जीवन से परमेश्वर प्रसन्न होगा और उसे हमारे घरों के द्वारा महिमा मिलेगी!

टिप्पणियां

[1]इस पद्य में परिभाषाएं द *एक्सपोजिटर बाइबल कमेंटरी,* अंक 10, *रोमन्स-गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 476 में जेम्स मोंटगोमरी बोइस, ''गलेशियंस'' से ली गई थीं। [2]वही। [3]वही। [4]उनका क्या जो पहले से नशेड़ी हैं? हमें उन्हें उनकी समस्या से निकालने की सहायता में कोशिश करनी चाहिए। मतवालापन एक पाप है-पर अकेला यही पाप नहीं, और यह भी नहीं है कि यह दूसरे पापों में सबसे बुरा (इसके परिणामों को छोड़) हो। जिन शराबियों के सम्पर्क में हम आते हैं उनके लिए जो भी कर सकें, हमें करना आवश्यक है।